पहचान

चेहरा हर इंसान की पहचान होती हैं। चेहरे से ही अलग-अलग व्यक्ति को हम याद रखते हैं, मगर चेहरे से इंसान की परख नहीं की जा सकती। किसी भी इंसान की परख उसके स्वभाव से होती हैं। इंसान के अच्छे-बुरे कर्मों से ही उसकी असली परख होती हैं। कई बार जब हम किसी से पहली बार मिलते है तो हमें वो बहुत अच्छे लगते है लेकिन धीरे-धीरे जब हम उनसे मिलने लगते है तब हमें एहसास होता है कि यह इंसान वास्तव में कैसा हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जब हम किसी से पहली बार मिलते है तो शायद वे उतने पसंद नहीं आते है लेकिन धीरे-धीरे अपने कर्मों से अधिक प्रिय हो जाते हैं। एक बार मेरे साथ ऐसा ही हुआ था जब मैंअपने घर के पास के मैदान में झूला झूल रही थी। वहाँ पर मेरी मुलाकात मेरी उम्र की एक बच्ची के साथ हुई थी जिसका नाम राखी था। उससे मेरी दोस्ती हो गई। वह मुझे अच्छी लगने लगी थी। वह दिखने में बहुत प्यारी भी थी लेकिन धीरे-धीरे जब हम हर शाम मिलने लगे तब मुझे उसके असली स्वभाव का पता चला। एक शाम जब मैं झूला झूल रही थी तब वह पीछे से आकर मुझे झूले से गिरा देती है और मुझे चोट लग जाती है जो देखकर वह हँसने लगती हैं। मैंने उस लड़की की भोली सूरत से यह अनुमान लगाया था कि वह बहुत अच्छी होगी मगर उसका आचरण कुछ और ही निकला। उस दिन मुझे अपनी नानी की कही हुई बात याद आ गई थी कि "चेहरे से पहचान होती है, परख नहीं।"

वमिका सांगनेरिया
६ डी